विषय प्रवेश

तबला वाद्य लगभग 300–400 साल पुराना अवनद्ध वाद्य हैं। गायन तथा वाद्य के लिए साथसंगत करने के उद्देश्य से निर्माण हुआ यह साज साथसंगत और स्वतंत्र वादन इन दोनों विधाओं में अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रहा हैं। प्राचीन काल में धृपद–धमार गायन प्रकार के साथ साथसंगत करने के लिए पखावज का उपयोग किया जाता था। धृपद–धमार गायकी की संगत में पखावज वादक को मुक्त रूप से वादन करने की काफी छूट प्राप्त होती थी और पखावज वादक भी अपना वादनकौशल्य अधिक सक्षमता के साथ प्रदर्शित किया करता था। किन्तु जब 18 वी सदी में 'ख्याल गायकी' का उद्‌गम हुआ और वह अधिक लोक प्रिय हो गई, तब साथ संगत के लिए पखावज के अलावा किसी दूसरे अवनद्ध वाद्य की आवश्यकता महसूस हुई जो ख्याल गायन को अपेक्षित साथ–संगत कर सके और यह कमी तबला इस वाद्य ने पूरी की।

तबला वाद्य के उद्‌गम के बाद जो भी तबला वादक थे वो बहुतांश पखावज वादक ही थे, जो तबला बजाते थे। धृपद–धमार इस गायन के साथ मुक्त वादन करने की आदत होने की वजह से ख्याल गायन के साथ अपेक्षित संयमित साथसंगत में प्रतिभावान तबला वादकों को अपनी विद्वत्ता, कौशल्य एवं प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलना ही बंद हो गया इसके फल स्वरूप इन वादकों ने अपनी खुशी के लिए स्वतंत्र तबला वादन करना शुरू किया। स्वतंत्र तबला वादन के लिए विशिष्ट वादन साहित्य की आवश्यकता थी इसके लिए कई विद्वान प्रतिभाशाली वादकों द्वारा अपनी शैली के अनुसार कई अनेक रचनाओं का निर्माण किया गया। स्वतंत्र तबला वादन में बंदिशों के अनेक प्रकार बन गए, जिनका वर्गीकरण दो भागों में होता हैं। जिसे विस्तारक्षम रचना और पूर्वसंकल्पित रचना के नाम से संबोधित किया जाता हैं।

विस्तारक्षम रचना यानी जिस रचना का विस्तार किया जाता हैं उस रचना को विस्तारक्षम रचना कहते हैं। विस्तारक्षमता ही इन रचनाओं का प्राण तत्व होता हैं। विस्तारक्षम रचनाओं में खाली–भरी के तत्व का सुनियोजित रूप से उपयोग

किया जाता हैं। स्वतंत्र तबला वादन में पूर्वसंकल्पित रचनाओं की तुलना में विस्तारक्षम रचनाओं का वादन तबला वादकों द्वारा अधिक समयतक किया जाता हैं। स्वतंत्र तबला वादन में जो भी विस्तारक्षम रचनाएँ बजाई जाती हैं, उन विस्तारक्षम रचनाओं के अंतर्गत मुख्यतः पेशकार, कायदा, एवं रेला ये तीन प्रमुख रचनाएँ आती हैं। पर इन तिनों रचनाओं के प्रयोग का सांगीतीक उद्देश्य भिन्न–भिन्न स्वरूप का होता हैं तथा विस्तारक्षम रचनाओं में लग्गी, लडी, बाँट जैसे अन्य भी विस्तारक्षम रचनाएँ हैं, लेकिन उनका विस्तार प्रायः पेशकार, कायदा, रेला जैसे नहीं होता। स्वतंत्र तबला वादन करते समय विस्तारक्षम रचनाओं का उपयोग किस तरह से किया जाता हैं? विस्तारक्षम रचना बजाते समय किस प्रकार के अनुशासन का पालन करना पडता है? इसके साथ ही रचना का विस्तार सौंदर्य इनके बारे में अधिकतर जानकारी उपलब्ध ना होने की वजह से प्रस्तुत शोधप्रबन्ध की माध्यम से इन तथ्यों को उजागर करने का एक प्रामाणिक प्रयत्न शोधार्थी द्वारा किया गया हैं।

'स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन' इस विषय पर अभी तक कोई भी अनुसंधान कार्य नहीं हुआ है। इसी कारण शोधार्थी को प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान कार्य करने की आवश्यकता महसूस हुई। तबले में अभी तक जो भी शोधकार्य हुए हैं। उनमें तबला वाद्य का उद्‌गम और विकास, घराना या किन्हीं दो घरानों की तुलना या किसी ख्याति प्राप्त कलाकार का जीवन दर्शन, सांगीतिक योगदान, स्वतंत्र तबला वादन या साथसंगत आदि विषयों पर ही अधिक संशोधन किए हुए दिखाई देते है, किन्तु तबले की विस्तारक्षम रचना इस विषय पर अभी तक कोई भी अनुसंधान कार्य दिखाई नहीं देता हैं। तबले पर अनेक विद्वानों द्वारा लिखी बहुत सी किताबें उपलब्ध हैं, परन्तु जहाँ तक मेरी खोज है, इनमें पं. सुधीर माईणकर और श्री. जमुनाप्रसाद पटेल इनकी लिखी किताबों के अलावा अन्य किताबों में विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में जो भी जानकारी हैं, उनमें अधिकतर विस्तारक्षम रचनाओं का विस्तार ही दिखाई देता हैं इसलिए 'स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन' इस विषय को लेकर अनुसंधान कार्य होना शोधकर्ता के दृष्टि से अत्यंत आवश्यक था।

शोधकर्ता के माता पिता, गुरूजन एवं मार्गदर्शक गुरू, विद्वान कलाकार इन सभी के शुभ–आशिर्वाद, शुभकामनाएँ और मार्गदर्शन में यह संशोधन कार्य पूर्ण

रूप से संपन्न हो पाया हैं। एकल तबला वादन में बजायी जानेवाली इन विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में गुरूजनों के मार्गदर्शन में किए गए प्रस्तुत विवेचन से भविष्य में तबला साधक जरूर लाभान्वित होंगे, उन्हें दिशा निर्देश मिलेगा साथ ही, उनका ज्ञानवर्धन होगा और विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में अध्ययन करते समय उचित दिशा भी मिलेगी, ऐसा शोधार्थी का विश्वास है। यही इस शोध प्रबंध की सही रूप में सफलता होगी, ऐसा शोधार्थी का मानना है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में अगर कोई कमी रह गयी हो तो, वह केवल शोधार्थी के अल्पमति के कारण है, जिसें गुणीजन बडे मन से स्वीकार करें। अपितु, प्रस्तुत शोध प्रबंध में रहनेवाली कमियों को भविष्य में कोई शोधार्थी पूरा करे, तो वह स्वीकार है तथा प्रस्तुत शोध प्रबंध का आधार लेकर अगर तबले का कोई शोधार्थी विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में और भी अधिक कार्य करना चाहे, तो वह बडे ही गौरव की बात होंगी।

तबला साधकों को विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में उचित दिशा दिखाते हुए, उन्हें सही रूप में मार्गदर्शन करना ही प्रस्तुत शोधप्रबंध का एकमात्र प्रामाणिक उद्देश्य हैं। इस भूमिका के साथ, तबले के विभिन्न मुर्धन्य कलाकारों, गुरूजनों विद्वानों के अनुभव एवं विचारों को प्रमुख आधार बनाते हुए शोधार्थी ने प्रस्तुत शोधप्रबंध में ''स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन'' में अपने विचारों को उजागर करने का प्रयास किया हुआ है। प्रस्तुत शोधप्रबंध की आवश्यकता को देखते हुए स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में उचित निर्देशन का उद्‌घाटन होना सबसे जरूरी था, तबले के विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में भविष्य में और भी परिणामकारक तथा विधायक रूप में संशोधन कार्य होने की संभावनाओं का जरूर महत्व है, ऐसा शोधार्थी का विश्वास हैं।

दिपक दाभाडे

(शोधार्थी)